International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

# सदभावना रेल यात्रा एक अनूठा प्रयोग : डॉ॰ एस॰एन॰ सुब्बाराव

**डॉ॰ एजाज अहमद[1], सुनील कुमार[2]**

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, वाई॰एम॰डी॰ कॉलेज, नूंह (मेवात)
[2]शोध छात्र, इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

## 1. परिचय

सद्भावना से तात्पर्य किसी देश के निवासियों की उस भावनात्मक या आंतरिक एकता से है, जिसमें मानव अपनी एक विशिष्ट जाति, वर्ग, समुदाय, धर्म, संस्कृति, सम्प्रदाय और प्रांतों के संकीर्ण हितो को भूलकर सम्पूर्ण राष्ट्र की एक सामान्य संस्कृति, भाषा, भौगोलिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों से ऊपर उठकर मानव–कल्याण तथा जगत कल्याण के बारे में सोचो तथा अपने जीवन में उसका प्रयोग करें। एक बार बिनोबा भावे जी कर्नाटक प्रदेश के अंदर शांति का संदेश दे रहे थे जब उन्होंने बोलना शुरू किया तब नीचे से लोग नारे लगा रहे थे। भारत यात्रा की जय, महात्मा गांधी की जय और साथ बोले जय कर्नाटका, उस दौरान बिनोबा जी ने 'जय–जगत'' का नारा दिया।[1] उन्होंने कहा कि, "अगर हम राष्ट्र–राष्ट्र जपते रहेंगे तो निरन्तर लड़ाईयाँ चलती रहेंगी।[2] इस लिए हमें पूरे विश्व–कल्याण के लिए सोचना चाहिए। आपसी भाई–चारा एक दूसरों के धर्मों को अपना धर्म मानना चाहिए साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान, संगठित हिंसा में वृद्धि हुई जिसके कारण देश के विभिन्न हिस्सों में अनेक दंगे हुए, जिनमें साम्प्रदायिक और राजनीतिक थे। हिंसाग्रस्त स्थानों पर डॉ॰ एस॰एन॰ सुब्बाराव के नेतृत्व में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा दंगों से प्रभावित स्थानों पर शिविर आयोजित किए गये। इन शिविरों के माध्यम से सभी राज्यों के युवाओं को संगठित कर शिविरों के माध्यम से जरूरत मंदों के लिए प्रेम और सेवा की अपार शक्ति का प्रदर्शन कर सके। अशांत क्षेत्रों के लोगों के बीच प्यार और दोस्ती को फिर से जगाया। उन्हें एक समुदाय के रूप में रहने, काम करने, खेलने, सीखने और प्रार्थना करने का उदाहरण– धर्म, जाति, स्थिति या भाषा के सभी मतभेदों को प्यार करते हैं।

बार–बार होने वाले दंगों से उत्पन्न भय और संदेह के कारण राष्ट्रव्यापी स्तर पर सुब्बाराव ने महसूस किया की। एक विशेष ट्रेन द्वारा सद्भावना रेल यात्रा का आयोजन किया जाये और सद्भावना रेल यात्रा के माध्यम से सभी प्रदेशों में शांति तथा सद्भावना का संदेश भारतवर्ष में दें। भाई जी ने विचार किया था कि, "यें विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और भाषाई एक मंच और एक साथ समूह में हो तो लाखों लोगों के मन में नई आशा और विश्वास पैदा होगा जो पहले से ही एकता और राष्ट्रीयता की भावना खो रहे हैं।"[3]

भाई जी चाहते थे कि, "इस आयाम का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम वास्तव में तभी सफल होता है, जब बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल होंगे। इस परियोजना को लोकप्रिय समर्थन मिलता है, पूरे कार्यक्रम को एक जन–आंदोलन बनना चाहिए ताकि देश में एक वास्तविक सौहार्दपूर्ण माहौल हो, जिसमें सभी समुदाय शांति और सद्भाव से रहें।"[4]

सुब्बाराव ने सेवादल में कार्य करते हुए यह महसूस किया कि, "हम भारतीयों को जाति, धर्म एवं भाषा के विभेदों से दूर रहकर एकता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।"[5] जब भाई जी गांधी शांति प्रतिष्ठान में पहुँचे तो अपने विचारों में एक नई दिशा जोड़ दी कि, "हमें दलगत भेदों को भुला देना चाहिए इसके लिए अभिन्न एकता का प्रचार करना चाहिए।" भाई जी का अखण्ड विश्वास था कि मानव जाति में एकता स्थापित होने पर राष्ट्रों की सीमाएं समाप्त होकर विनोबा भी के 'जय जगत्' अभिवादन का सही स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा।[6] ऐसा मंच ही युवाओं में, एकता, स्व–अनुशासन, सहयोग, शारीरिक श्रम तथा परियोजनाओं के प्रति आकर्षण उत्पन्न कर जरूरतमंद लोगों के सहायतार्थ कार्य करने का अवसर प्रदान कर सकते हैं–

बार–बार होने वाले दंगों से उत्पन्न भय और संदेह के कारण राष्ट्रव्यापी स्तर पर युवा शक्ति के सुखदायक स्पर्श की तत्काल आवश्यकता सुब्बाराव जी महसूस कर रहे थे। भाई जी ऐसे शुभ अवसर की ताक में थे जो खादी को लोकप्रिय बनाने, महात्मा गांधी का शांति संदेश घर–घर पहुँचाने तथा आपसी भाई–चारे को बढ़ाया जा सके। सन् 1990 में तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री अर्जुन सिंह का संदेश सुब्बाराव को प्राप्त हुआ।[7] इस संदेश में मंत्री जी ने कहा था कि, "सरकार ने एक कार्यक्रम संयोजक समिति गठित की है जो स्वामी विवेकानंद 1993 में शिकागो में आयोजित 'पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स' में दिए गए अविस्मरणीय संदेश की शताब्दी के कार्यक्रम निर्धारित करेगी। क्या आप उस कमेटी की सदस्यता स्वीकार करेंगे?[8] भाई जी ने अनुभव किया कि यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा सम्मान है। अर्जुन सिंह ने भाई जी को बताया कि, "इस समिति में कई विशिष्ट सदस्य है, और उच्च स्तरीय बौद्धिक चर्चा होने की संभावना है। मैं चाहता हूँ कि आप भी उसमें सम्मिलित हो तो कुछ ठोस कार्यक्रम का स्वरूप निकल सकता है।[9] कार्यक्रम संयोजक समिति की कुछ बैठकों में भाग लेने के उपरांत सुब्बाराव ने एक कार्यक्रम की योजना तैयार की–

1. 11 सितम्बर 1993 का दिन स्वामी विवेकानंद के उस संदेश की शताब्दी का दिन था, जब उन्होंने मानवता को धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया था। स्वामी जी ने अपने ऐतिहासिक भाषण में कहा– सभी धर्मों में अंततोगत्वा प्राणी मात्र की रक्षा और कल्याण निहित है, इसलिए सब धर्म एक ही ओर ले जाते है।[10]

2. 1994 को महात्मा गांधी जी के जन्म का 125वां वर्ष था। इसका महत्व इसलिए माना गया क्योंकि महात्मा गांधी जी 125 वर्ष तक जीवित रहना चाहते थे, लेकिन 79 साल की आयु में वे हमसे बिछुड़ गए। 11 सितम्बर को अफ्रीका में महात्मा गांधी ने पहला सत्याग्रह प्रारम्भ किया था।[11]

11 सितम्बर 1995 में आचार्य विनोबा भावे जी की जन्म शताब्दी थी। विनोबा जी ने नारा दिया था कि, जय जगत्' वह कहते थे कि हम राष्ट्र–राष्ट्र जपते रहेंगे तो निरन्तर लड़ाईयाँ चलती रहेंगी।[12] तीनों को ध्यान में रखते हुए भाई जी ने ऐसा सुझाव दिया कि 1993, 94, 95 को निरन्तर स्मृति रूप से मनाया जाए।

भारत देश ने 1993 का वर्ष को 'चेतना वर्ष' के रूप में नामित किया था। इस अवसर पर सुब्बाराव ने सुझाव दिया कि साहित्य छापकर बांटने, स्मृति में भवन निर्माण करने या विचार–विमर्श आयोजित करने के अतिरिक्त 'एक सद्भावना रेलयात्रा' 1993–94–95 में निकाली जाए।[13] भारत को बाहरी दुनिया में बुद्ध विवेकानंद और महात्मा गांधी के माध्यम से जाना जाता है, जिन्होंने प्रेम, करूणा की ताकत दिखाई लेकिन फिर भी नफरत हिंसा की एक तस्वीर हाल के वर्षों में असहिष्णुता की आतंकवाद धार्मिक कट्टरता और साम्प्रदायिक दंगों के माध्यम से दर्शाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप जान–माल का भारी नुक्सान हुआ है। सुब्बाराव ने सद्भावना रेल यात्रा के बारे में रेल मंत्री 'श्री सी॰के॰ जाफर शरीफ' को बताया और कहा कि, "सद्भावना रेल यात्रा में भारत के सभी प्रदेशों के युवक– युवतियाँ शामिल होंगे और जिन स्टेशनों से रेल यात्रा गुजरेगी वहां के युवक और युवतियाँ प्रेम सामाजिक सौहार्द, भाई–चारा और राष्ट्रीय एकता का प्रचार करेंगे और इस आयोजन में शिक्षा मंत्री तथा रेलमंत्री का पूर्ण सहयोग लिया जाएगा।"[14]

रेलमंत्री ने इस योजना की सराहना की परन्तु यह सुझाव दिया कि आप अपने प्रयास से रेलवे बोर्ड को भी इस परियोजना से सहमत कराने का प्रयास करों। सुब्बाराव रेलवे बोर्ड के 30–35 अधिकारियों से रेलभवन में मिला और चर्चा की किन्तु सुब्बाराव के सुझाव से पूर्ण सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम बहुत खर्चीला है, इनमें लगभग एक करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। रेलवे ने इतने बड़े खर्च को सहन करने में असमर्थता व्यक्त की। सबकी चर्चा सुन के रेलमंत्री सुब्बाराव से कहने लगे कि इस समस्या का क्या समाधान हो? भाई जी ने उत्तर दिया, "मैंने सभी प्रकार के विचार सादर सुन लिए हैं, हमें यह सुनने को मिला है कि इस प्रकार की 'सद्भावना रेल यात्रा' पर लगभग एक करोड़ खर्च आएगा।[15] यह सुब्बाराव ने कहा कि, "अभी–अभी समाचार–पत्रों में पढ़ा है कि एक साम्प्रदायिक दंगे में बम्बई में फैक्टरी, स्कूल, अस्पताल आदि का लगभग 500 करोड़ की हानि हुई है, तथा 200 लोगों की हत्या की गई थी।"[16] मेरे सुझाव के अनुसार यदि सदभावना रेल यात्रा किसी एक छोटे से गांव को इस पागलपन से मुक्त रहने के लिए प्रेरित कर सके तो आपके खर्च का मूल्य प्राप्त हो जाएगा। फिर रेलमंत्री ने प्रशंसा करते हुए इस कार्यक्रम की हाँ भर दी। सभी उपस्थित अधिकारी भी सहमत हो गए और सुब्बाराव ने अमेरिका जाने से पहले रेलयात्रा की विवरणिका तैयार कर उन्हें सौंप दी।

## सद्भावना समिति का गठन

सुब्बाराव ने राष्ट्रीय युवा योजना के परिवार के सभी प्रदेश के युवाओं को संदेश भेज कर एक स्थान पर एकत्रित कर उन्हें सद्भावना रेल यात्रा से अवगत करवाया और समिति के सदस्यों ने राष्ट्रीय युवा योजना शिविरों के लिए भी कुछ कार्यक्रम तय किए है। सुब्बाराव ने गोरखपुर में अपने सहयोगी एकत्रित किये तब उन्होंने बताया कि वे लगभग 3000 संस्थाओं के सम्पर्क में है जो इस शताब्दी वर्ष में निबन्ध, वाद–विवाद व चित्रकला, प्रतियोगिताएँ आयोजित करेंगे। भाई जी ने कहा राष्ट्रीय युवा योजना की प्रत्येक शाखा को इस शताब्दी वर्ष में उपयुक्त कार्यक्रम उठाने चाहिए। भाई जी ने सुझाव दिया कि, "आप अपने जिले के अधिकारियों और प्रतिनिधियों से सम्पर्क करें और ऐसी संभावनाओं की तलाश करें, जिससे आपके जिले में 'जिला सद्भाव समिति' का गठन किया जा सके। इस प्रकार की समितियों के गठन और कार्यक्रमों से निश्चित ही आपे जिले में विभिन्न सम्प्रदायों, धर्मों और जातियों के लोगों में प्यार एवम सद्भावना का वातावरण बनेगा।[17]

अक्सर देखा गया है कि शांति समितियों का गठन साम्प्रदायिक तनाव एवं उपद्रव के बाद ही किया जाता है। क्यों न हम सद्भाव एवं स्नेह भरा यह कार्यक्रम शताब्दी वर्ष में ही शुरू करें जिससे कि साम्प्रदायिक सद्भाव का वातावरण निरन्तर बना रहें। स्वामी विवेकानंद शताब्दी वर्ष की शुरूआत इन्हीं सद्भाव समितियों से की जाए।

इतनी व्यस्त दिनचर्या के होते एक नौकरी, पैसा व अन्य किसी काम में लगे व्यक्ति के लिए यह बिल्कुल संभव नहीं है कि वह चौबीस घंटे मिशन से जुड़ सके। अतः लोगों को ध्यान में रखते हुए ही हमने इसे आपके अपने क्षेत्र में रेल के पहुँचने पर अपने व्यस्तम समय में से दो–चार घंटे निकालकर यदि आप भारत वर्ष से आये युवा साथियों से मिलेंगे, दोस्ती बढ़ाऐंगे तथा कार्यक्रम देखेंगे तो यहीं आपका बहुत बड़ा योगदान होगा।

इस प्रकार से भाई जी ने पूरे भारतवर्ष में 'राष्ट्रीय युवा योजना' के कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया। भाई जी ने कहा, "इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रशासन, स्कूल, कॉलेज, एन॰सी॰सी॰, भारत स्काऊट एंड गाईड, राष्ट्रीय सेवा योजना, नेहरू युवा केन्द्र,

यूथ हॉस्टल तथा अन्य सभी राष्ट्रीय या स्वैच्छिक संस्थाओं 'जो किसी न किसी रूप में सेवा कार्य से जुड़े हो' से सम्पर्क स्थापित करके अपने क्षेत्र में कार्यक्रम को सफल बनाने का प्रयास अभी शुरू कर दें।"[18] जिस क्षेत्र में हमारे राष्ट्रीय युवा योजना की यूनिट या कार्यकर्त्ता नहीं है, उस क्षेत्र में कोई भी सेवा से जुड़ी स्वैच्छिक या राष्ट्रीय संस्थाओं को इसके लिए सम्पर्क कर सकती है। कार्यक्रम में विचार–विमर्श, सद्भावना गोष्ठी, बैठकों आदि के द्वारा आपसी प्रेम और भाई–चारा बढ़ाने के साथ– साथ शांति जुलूस सर्वधर्म प्रार्थना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। इस कार्यक्रम का प्रारूप सुब्बाराव जी ने वहाँ आयें विभिन्न राज्यों से सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को बताया तथा सभी ने सद्भावना रेलयात्रा में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सुब्बाराव ने केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री एवं विवेकानंद परिक्रमा समिति के अध्यक्ष श्री अर्जुन सिंह का धन्यवाद करते हुए कहा कि, "मुझे विवेकानंद परिक्रमा समिति के कार्यदल में भी शामिल होने का आमंत्रण मिला है, जिसे मैंने विनम्रता पूर्वक स्वीकार किया है। इस समिति में मेरे भाग लेने का उद्देश्य यह कि शताब्दी समारोह में जनता का ध्यान गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार, अज्ञानता, हिंसा तथा विघटनकारी प्राकृतिक समस्याओं की ओर आकर्षित किया जा सके, जो हमारे सामने मुँह फैलाए खड़ी है।"[19]

मानव संसाधन एवं विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने 'सद्भावना रेल यात्रा' के प्रस्ताव को अपना सहयोग एवं स्वीकृति देकर अंततः रेलमंत्री श्री जाफर शरीफ ने सुब्बाराव ने दो वर्ष पूर्व देखे गए सपने को साकार रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1993 का वर्ष स्वामी विवेकानंद के विश्व–सामंजस्य के उस संदेश का शताब्दी वर्ष था, जिसे सौ साल पहले स्वामी जी ने शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद के समक्ष दिया था। ठीक सौ साल बाद भाई जी ने भाग लिया और स्वामी विवेकानंद तथा महात्मा गांधी के विचारों से दिशा प्राप्त कर उन्हें उपस्थित जन–समुदाय को सम्बोधित किया। सुब्बाराव ने कहा कि, "ठीक 100 वर्ष पहले यहाँ स्वामी विवेकानंद का लोगों ने स्वागत किया था, जब वे 'सर्वधर्म समभाव' का संदेश लेकर आये थे। इन 100 वर्षों में मानवता को और आगे बढ़ाना चाहिए। सुब्बाराव ने कहा कि महात्मा गांधी जी ने आगे चलकर 'सर्वधर्म मम् भाव' अर्थात् 'सब धर्म मेरे है' का संदेश दिया था जिसे अब संसार में स्वीकार किया जाना चाहिए।"[20] उपस्थिति प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक इस सुझाव का समर्थन किया।

सुब्बाराव को शिकागो में होने वाली 'पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स' के दौरान एक लम्बा फैक्स–संदेश प्राप्त हुआ, जिसमें सुब्बाराव के अनुसार उन रेलवे स्टेशनों का विस्तृत ब्यौरा, तिथियों सहित दिया गया था, जहाँ–जहाँ से सद्भावना रेल को पहुँचना और आगे प्रस्थान करना था।

## सद्भावना रेल यात्रा की तैयारी

भाई जी ने सद्भावना रेलयात्रा की कल्पना की और रेल यात्रा का निर्देशन करना था। हाल के वर्षों में असहिष्णुता को आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता और साम्प्रदायिक दंगों के माध्यम से दर्शाया गया, जिनके परिणामस्वरूप जान–माल का भारी नुक्सान हुआ था। यह सबसे उपयुक्त है कि राष्ट्रीय युवा योजना ने 1993–94–95 के तीन महत्वपूर्ण वर्षों को कवर करते हुए सद्भावना रेल यात्रा की शुरूआत करनी है।

सबसे पहले रेल को हल्के नीले रंग जो कि, 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के रंग में रंगा गया।[21] इसमें 14 डिब्बे जो प्रत्येक डिब्बे का नाम प्रसिद्ध नदियों के नाम पर रखा गया जैसे गंगा, यमुना, कावेरी तथा गोदावरी आदि।[22] यह द्वितीय श्रेणी के शयनयान थे, जो काफी सुविधाजन्य थे। भारतीय युवाओं के सबसे लोकप्रिय नेता यात्रा का नेतृत्व करने वाले भाई जी ने 'पहियों पर शिविरों' की लोकप्रियता और सफलता को रेखांकित किया।[23]

## सद्भावना रेलयात्रा के प्रतिभागी

सद्भावना रेलयात्रा में सामाजिक कार्यकर्त्ता, इनमें कुछ ऐसे थे जो स्वयं के युवा संगठन चला रहे थे। सभी राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। मिशन में एक बार में औसतन 250 युवक–युवती सफर करते और उनमें से लगभग 100 ने हर 10–12 दिनों में बदलाव किया, जिससे प्रतिभागियों की कुल संख्या 26 राज्यों से 1867 हो गई। महिला प्रतिभागियों की संख्या 25 से 97 के बीच होती थी।

ये युवा आंध्र–प्रदेश, आसाम, बिहार, चण्डीगढ़, दिल्ली, गुजरात, गोवा, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, पांडिचेरी, पंजाब, राजस्थान आदि प्रदेश के अलावा सिक्किम, तमिलनाडू, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल और चंबल के दो पूर्व डकैत जो शांतिकर्मी थे। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चार अमेरिका, दो जर्मनी लड़कियाँ, एक फ्रांसिसी महिला और एक ब्रिटिश शामिल हुआ। जर्मन लड़कियाँ शुरू से ही यात्रा में सम्मिलित हुई, दो महीनों से अधिक समय तक रही। 'सुश्री डायना लोसन, थियोसोफिक्ल सोसायटी' से सम्बन्धित एक अमेरिकी महिला, यात्रा में शामिल हुई।[24] सभी विदेशी युवाओं ने न केवल सद्भावना युवा परिवार के सदस्यों के रूप में खुद को समायोजित किया और साथ में विभिन्न भारतीय भाषाओं में कई नारे भी सीखें।

## शिविर का आयोजन

सद्भावना रेलयात्रा शुरू करने से पहले एक उन्मुखीकरण शिविर का आयोजन किया, जिसमें सद्भावना रेलयात्रा में सवार होने वाले युवकों और युवतियों के पहले जत्थे के लिए 26 सितम्बर से 4 अक्तूबर 1993 तक उन्मुखीकरण शिविर का नेतृत्व 'श्री देशबंधु शर्मा' ने किया।[25] इस दौरान युवकों ने दिल्ली में पहाड़गंज की सड़कों पर शांति मार्च निकाला और शाम को सर्वधर्म प्रार्थना सभा की बैठक में एक हजार से अधिक स्थानीय लोगों ने भाग लिया। 2 अक्तूबर को राजघाट स्थित गांधी समाधि पर पूजा अर्चना की और शिविर के आस–पास की गलियों में सफाई अभियान चलाया।

इस शिविर के दौरान बिक्री के लिए आवश्यक साहित्य, गांधी जी पर एक विशाल गोवाई प्रदर्शनी को गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति द्वारा तैयार किए गये साम्प्रदायिक सद्भाव की खरीद की गई। आवश्यक स्टेशनरी सामान आदि के अलावा सद्भावना युवकों के लिए 250 साईकिल खरीदी गई। धर्मेन्द्र भाई ने बताया कि, "दिल्ली शिविर के दौरान महाराष्ट्र के 'लातूर' में भूकम्प पीड़ितों के लिए युवाओं ने चंदा एकत्रित किया और शिविर में अनेक अनुभवी सामाजिक कार्यकर्त्ता शामिल हुए जो स्वयं के युवा संगठन चला रहे थे।"[26]

सद्भावना रेलयात्रा ने मूल रूप से योजना के अनुसार 5 अक्तूबर 1993 को नई दिल्ली से अपनी यात्रा शुरू करनी थी, लेकिन महाराष्ट्र में भूकम्प के कारण 8 अक्तूबर 1993 तक इसे स्थगित कर दिया।[27] इस दौरान सुब्बाराव सद्भावना युवकों के साथ नई दिल्ली से साधारण ट्रेन पकड़ कर हरियाणा प्रदेश के पानीपत एवं कुरूक्षेत्र का दौरा किया। सदभावना यात्रा के तीन दिनों के बारे में बताते हुए हरियाणा युवा शक्ति के प्रधान सुरेश राठी ने बताया कि, "भाई जी और युवा साथियों का बड़ी संख्या में स्थानीय मित्रों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया था।[28] यात्रा के दौरान सद्भावना के युवाओं ने स्थानीय स्कूलों, कॉलेजों और कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय और पानीपत के ऐतिहासिक युद्ध क्षेत्रों का दौरा किया। कुरूक्षेत्र में भाई जी ने सद्भावना युवा साथियों के साथ विशेष प्रार्थना की और खुद को भारत माता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। सर्वधर्म प्रार्थना में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए और सद्भाव को सार्थक किया। आखिर के तीसरे दिन भाई जी अपनी सद्भावना टीम के साथ दिल्ली लौट आये।

## सद्भावना रेलयात्रा को दिखाई हरी झंडी

2 अक्तूबर 1993 की सुबह गांधी जी की 125वीं जयंती पर देश के युवाओं ने साम्प्रदायिक सद्भाव की बुराई तथा विभाजनकारी प्रवृत्तियों की ताकतों से लड़ने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ एक प्रयास शुरू किया और प्रार्थना की। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 8 अक्तूबर को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 'मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह, रेलमंत्री श्री जाफर शरीफ और बड़ी संख्या में अधिकारियों की उपस्थिति में झंडी दिखाकर सद्भावना रेलयात्रा को रवाना किया।[29] इस दौरान अर्जुन सिंह ने भाषण के माध्यम से संदेश दिया– प्रेम और करूणा का अनूठा वाहन हमारे रेलवे की पटरियों पर इस भूमि की लम्बाई और चौड़ाई को पार करेगा जो स्वयं एकता का स्त्रोत है, मैं इसके लिए सभी की सफलता की कामना करता हूँ और अभिनव प्रयास और उत्साह पूर्वक आशा करता है कि जिन स्थानों पर यह ट्रेन रूकेगी, वे उन लोगों के लिए शक्ति और प्रेरणा के नए स्त्रोत बनेंगे, जो राष्ट्रीय एकता की लौ को जीवित और प्रज्ज्वलित रखना चाहते हैं।[30]

सद्भावना रेलयात्रा की सफलता की कामना करते हुए श्री जाफर ने संदेश दिया– मैं कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हमारे लोगों की बीच शांति और भाई–चारा के लिए यह सद्भावना रेलयात्रा देश में, हमारे लोगों के बीच, विशेष रूप से हमारे युवाओं के बीच 'शांति और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के उनके दृढ़ संकल्प को एक नया आश्वस्त करने वाला माहौल बनाएगी ताकि भारत माता अनेकता में एकता के साथ मजबूत बनी रहे और हमारे लोगों को विश्वास दिलाए।[31]

सद्भावना रेलयात्रा का पहला पड़ाव हरियाणा के अम्बाला रेलवे स्टेशन पर पूरे जोर–शोर से स्वागत किया और यात्रा का शुभारंभ सुबह ध्वजारोहण के साथ श्री अर्जुन सिंह और जाफर शरीफ ने किया।[32] ट्रेन को अम्बाला स्टेशन पर पहुँचते ही यहाँ के युवाओं का नेतृत्व हरियाणा सरकार के मंत्री और पंजाब के मंत्री ने सद्भावना यात्रा का औपचारिक रूप से स्वागत किया। श्याम को सर्वधर्म प्रार्थना की गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम और अंत में भारत की संतान का आयोजन किया। यहाँ सद्भावना, राष्ट्रीय एकता, भाई–चारा तथा शांति का संदेश दिया। रात को सद्भावना रेल ने यहाँ से प्रस्थान किया।

सद्भावना रेलयात्रा चंडीगढ़ होते हुए पंजाब के लुधियाना, जालंधर, अमृतसर, पठानकोट, उत्तराखंड के देहरादून, हरिद्वार और उत्तर–प्रदेश के मुरादाबाद, बरेली, कानपुर, लखनऊ, बनारस, फैजाबाद, इलाहाबाद आदि शहरों से होती हुई बिहार से समस्तीपुर से प्रवेश कर बरौनी, पटना, रंगीया और भागलपुर में जो कुख्यात हिन्दू–मुस्लिम दंगों के बाद हिन्दू भागलपुर और मुस्लिम भागलपुर में विभाजित हो गया था, जिसमें लगभग 2000 लोग मारे गये थे।

इन दोनों समुदायों के लोगों ने सद्भावना यात्रा का स्वागत किया। दोनों समुदायों के लगभग 10,000 लोगों ने सर्वधर्म प्रार्थना में भाग लिया। राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा यहाँ पर साम्प्रदायिक सद्भाव शिविर आयोजित किये जाने के बाद यहाँ शांति हुई और एक स्थायी सद्भावना परिषद् ने भागलपुर में काम किया। बिहार में सद्भावना युवाओं का स्वागत करने हर स्टेशन पर जनता दल के मंत्री मिले।

### 1. ट्रेन से दूर

सद्भावना रेलयात्रा ने बिहार से आसाम की तरफ प्रस्थान किया। आसाम के मुख्यमंत्री 'हितेश्वर सोईकिन, हला मिलनौर और विधायक' रात के खाने की मेजबानी में और उनके द्वारा यंत्रों के निर्देशक सुब्बाराव की सद्भावना यात्रा का उद्देश्य एवं ट्रेन के आगमन तथा प्रस्थान के समय को बताते, जो एक लेटर पर लिखकर भेजते थे।[33] कुछ दिन आसाम में सद्भावना यात्री ट्रेन के बाहर रहे। जब वे न्युजलपाईगुड़ी से तीन दिनों के लिए 'दार्जिलिंग और मिरिक' के लिए बस द्वारा यात्रा की और यहाँ के ग्रामीण लोगों के साथ घुलने–मिलने का मौका मिला। गांव वालों ने सद्भावना युवाओं का शानदार स्वागत किया और सद्भावना के कार्यक्रम यहाँ के लोगों को दिखाए जिनमें दो मुख्य कार्यक्रम थे–

1. सभी धर्मों की प्रार्थना
2. भारत की संतान की 18 अधिकारिक भाषाओं में झांकी निकाली।[34]

स्थानीय लोगों ने बिना रूके कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिसे उनमें से कुछ ने सोचा कि प्रदेशों के प्रशासन या स्थानीय अधिकारियों से सम्पर्क करना चाहिए। सद्भावना यात्रा आसाम में न्यूजलपाईगुड़ी गोहाटी, शांति निकेतन होते हुए हावड़ा, कलकत्ता पहुँची।

### 2. मदर टेरेसा के साथ

यह विशेष अवसर था। कलकत्ता में 'मदर टेरेसा' ने सद्भावना यात्रा का स्वागत किया। सुब्बाराव ने अपने लेख में लिखा है कि, "यद्यपि हम सभी महान् माता के बारे में जानते थे, लेकिन उनके साधारण जीवन को व्यक्तिगत रूप से देखना आश्चर्यजनक था।[35] उसकी पोशाक सरल थी, वह जमीन पर बैठी और बोली, उसके शब्द भी बहुत सरल थे–

"शुद्ध बनो, अपने साथियों से प्यार करें और भगवान से प्रार्थना करो। जैसे ही हमने उनसे विदा ली, मदर टेरेसा ने हम सभी को एक छोटी सी पर्ची दी और कहा, "यह मेरा विजिटिंग कार्ड है,"साथ में कहा, मौन का फल प्रार्थना है, प्रार्थना का फल विश्वास है, विश्वास का फल प्रेम है, प्रेम का फल सेवा है, सेवा का फल शांति है।"[36] सद्भावना रेल यात्रा कलकत्ता, हावड़ा, टाटानगर, बालासौर से कटक उड़ीसा में सद्भावना यात्रा का स्वागत विभिन्न दलों के मंत्री, नगर पार्षद और भीड़–भाड़ वाली सड़कों से होकर सद्भाव साईकिल रैली में शामिल हुए। सद्भाव परिवार ने जंगनाथ के दर्शन किये और सर्वधर्म प्रार्थना की। पुरी बेहरामपुर, विजयनगर, विशाखापट्टनम, काकीनाड़ा, राजमुंदरी, विजयवाड़ा, नेल्लोर, तिरूपति और मद्रास पहुँची। तमिलनाडु के वित्तमंत्री 'नेदुमचेझियान' ने शाहजहाँपुर में सद्भावना यात्रा के साथ गुरूद्वारे का दौरा किया। नेल्लोर के विषय ने नेल्लोर परिवार का शानदार स्वागत किया वहीं त्रिवेन्द्रम मस्जिद के इमाम त्रिवेन्द्रम रेलवे स्टेशन पर स्वागत करने आये। अतः सद्भावना यात्रा दक्षिण प्रदेशों के स्टेशनों से हैदराबाद पहुँची।

### 3. स्वामी जी ने दिया संदेश

सुब्बाराव ने बताया कि हैदराबाद में रामकृष्ण मिशन के 'स्वामी रंगनाथानंदजी' एक महान आत्मा सद्भावना परिवार मिला। वे स्वामी जी से मिले उस दौरान वह दलिया का भोजन कर रहा था। स्वामी जी ने धीमी आवाज में कहा, "मैं युवाओं से मिलने के लिए उत्सुक हूँ, लेकिन मेरा शरीर मुझे अनुमति नहीं देता है, अगर मैं संभाल सकता हूँ तो मैं 4–5 मिनट के लिए आऊंगा।"[37] स्वामी जी आगे युवा कार्यक्रम के दौरान डेढ़ घंटे के दौरान बैठे और बोलने के अनुरोध की अवहेलना करते हुए स्वामी जी 20 मिनट तक खड़े रहें और प्रेरणा की अपनी सुनहरी आवाज में बोले।

यह बहुत आशा और संतोष का विषय है कि भारत के पुरुषों और महिलाओं ने भारत में शांति और सद्भाव का माहौल बनाने की आवश्यकता को महसूस किया। वास्तव में भारत की एकता को हल्के में नहीं लिया जा सकता। सोवियत संघ, युगोस्लाविया जैसे देश जिन्हें कभी दुनिया के सबसे मजबूत राष्ट्रों में एक माना जाता था। आज टुकड़ों में बिखर गए हैं।

भारत दुनिया के सभी देशों में अद्वितीय है, आज जैसे नौजवान युवा साथी देश की अखण्डता व एकता के लिए कार्य करते रहेंगे, तो भारत माता सदा एक बनी रहेगी। हैदराबाद से प्रस्थान कर सद्भावना रेल वारंग्ल, गुलबर्ग, शोहलापुर, पुणे, मुम्बई, जलगम, भूसवाल से अमरावती, वारदा, नागपुर, सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद, गांधीनगर, गोदरा, रतलाम से उज्जैन पहुँची। इस दौरान अनेक प्रदेशों के स्टेशनों पर विदा किए गये कार्यक्रमों को देखना एक दिल को छू लेने वाला दृश्य था, जहाँ पूरे परिवार की आंखों में विदाई के साथ नए सम्बन्धों के लिए हाथ हिलाया। शाम को सभी धर्मों की प्रार्थना की गई और सद्भाव कार्यक्रम दिन का मुख्य कार्यक्रम रहता था।

उज्जैन में 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' के कुलपति डॉ॰ शिवमंगल सिंह सुमन शाम के कार्यक्रम में शामिल हुए और भावना से चकित होकर उन्होंने कहा, "मुझे समाज में 50 से अधिक वर्षों का अनुभव है, मेरे पूरे 79 वर्षों के जीवन में मैने आज जैसे 26 राज्यों वाला गतिशील भारत कभी नहीं देखा।"[38] अगले दिन कार्यक्रम में शामिल होने के बाद उन्होंने हल्के अंदाज में कहा– भाई जी का जिक्र करते हुए, "खुद को पागल करके, उन्होंने पूरे शहर उज्जैन के लोगों को पागल बना दिया और इस पागलपन में नचा दिया, जैसा कि वह स्वयं करता है।"[39] ऐसा कहकर उसने झुककर भाई जी के चरण स्पर्श किए जो उनसे बहुत छोटे थे।

सद्भावना रेल यात्रा उज्जैन से प्रस्थान कर इंदौर, भोपाल, बीना, झांसी, ग्वालियर, आगरा, भरतपुर, जयपुर और मथुरा, अलीगढ़, मेरठ और 24 मई 1994 को दिल्ली पहुँची।

सद्भावना यात्रा ने युवाओं के मुख्य कार्यक्रमों में से एक भागलपुर, गोधरा, अलीगढ़, बॉम्बे, सूरत और कानपुर जैसे दंगों से प्रभावित स्थानों का दौरा किया। युवाओं ने बड़ौदा और त्रिची में रेलवे स्टेशनों का दौरान करना तथा रेलकर्मियों के साथ विचारों का आदान–प्रदान करना एक अच्छा अनुभव था। यात्रा की अंतिम सभाओं में राजस्थान के भाजपा पार्टी के मुख्यमंत्री 'श्री भैरो सिंह शेखावत ने जयपुर में 15 मई 1994 को सद्भावना रेलयात्रा का स्वागत किया।[40] सर्वधर्म प्रार्थना में भाग लेने के बाद भैरों सिंह शेखावत ने भारत के सभी धर्मों को अत्यंत आवश्यक बताया और कहा कि हमें एक परिवार की तरह रहना चाहिए। सद्भावना मिशन के प्रयासों की सराहना की।

दिल्ली में सद्भावना रेलयात्रा का स्वागत, 'श्रीमती निर्मला देशपांडे, हरिजन सेवक संघ, श्री जाफर शरीफ, मंत्री कल्पनानाथ राय और गांधी शांति प्रतिष्ठान के सचिव राजगोपालन अन्य सहयोगियों ने यात्रियों का स्वागत किया। सद्भावना यात्रा के कार्यों की प्रशंसा की भाई जी को बधाई दी। अगले दिन सद्भावना रेल यात्रा को हरियाणा प्रदेश के रोहतक लाया गया, यहाँ शहर में साईकिल यात्रा और सर्वधर्म प्रार्थना और सद्भाव सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गए। सद्भावना यात्रा का स्वागत यहाँ प्रशासन व अन्य व्यक्तियों ने किया।

**सद्भावना मिशन का स्वागत एवं बधाई**

सद्भावना रेल यात्रा में अहम् भूमिका डॉ॰ सुब्बाराव ने निभाई। भाई जी के सम्पर्क में भारत वर्ष में जो कोई कभी न कभी आया, वह हमेशा भाई जी को अपने करीब मानता था। जब सद्भावना यात्रा भारत के किसी भी प्रदेश से गुजरी तो भाई जी के चहेते उनसे मिलने एक मिनट के लिए भी आ जाते और सद्भावना यात्रा भारत के किसी भी प्रदेश से गुजरी तो भाई जी के चहेते उनसे मिलने एक मिनट के लिए भी आ जाते और सद्भावना परिवार और भाई जी के आराम की व्यवस्था करना बिल्कुल स्वाभाविक था वे सद्भावना के लिए काम और खर्च करना अच्छा लगता था।

सभी प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं ने स्वागत किया। सर्वधर्म प्रार्थना में भाग लेने के बाद शेखावत ने भारत सभी धर्मों बहुत जरूरी एक परिवार के रूप में रहने को कहा। तमिलनाडू में अन्नाद्रुम के मंत्री ने दुमचजियान सद्भावना मिशन का स्वागत और महाराष्ट्र के राज्यपाल सी॰ सुब्रह्ममयम् की अध्यक्षता में युवाओं को विशेष रूप से राज्य के राज्यपाल डॉ॰ चेन्नारेड्डी ने राजभवन में शाम को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान विशेष रूप से बधाई दी। पूर्व राष्ट्रपति आर॰ वेंकटरमन ने दो मौकों पर सद्भावना मिशन से मिलने आयें। कांग्रेस विधायक पवन पांडे और शिवसेना के नेता ने मिशन को बधाई दी।

सभी धर्मों के नेताओं द्वारा आतिथ्य सत्कार बमुश्किल चर्च, मुस्लिम मंजार, किटान कई जगहों पर सिक्ख गुरुद्वारों, हिन्दू मंदिरों, चर्चों ने युवाओं का शानदार स्वागत सामुदायिक भोजन का आयोजन किया। नेल्लोर के विषय, आर्क विषय बेनेडिक्ट मार ग्रेगोरियम और त्रिवेन्द्रम मस्जिद के इमाम ने त्रिवेन्द्रम रेलवे स्टेशन पर युवाओं का स्वागत किया। "इस दौरान सुब्बाराव ने उज्जैन में एक सद्भावना युवाओं द्वारा किये जा रहें अच्छे कार्यों की प्रशंसा की।"[41] भागलपुर जो हिन्दू–मुस्लिम दंगों के बाद यहाँ के दोनों समुदाय के लोगों ने सद्भावना यात्रा का स्वागत किया। बौद्ध भिक्षुओं और ब्रह्मकुमारियों ने विभिन्न स्थानों पर सद्भावना युवकों का हार्दिक स्वागत किया।

महिलाओं की भागीदारी का श्रेय महात्मा गांधी को जाता है जिन्होंने कहा था, "शक्ति का मतलब नैतिक शक्ति है, भविष्य महिलाओं के हाथ में है।"[42] महिलाएँ सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के बीच और भाई जी की लोकप्रियता साथ–साथ उन्हें यह अहसास हुआ कि भारत की स्थिति राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा भाई जी के नेतृत्व में शुरू की गई सद्भावना यात्रा की आवश्यकता ने बहुत सी महिलाओं को इस मिशन में सक्रिय रूचि लेने के लिए प्रेरित किया।

सद्भावना युवाओं के स्वागत समारोह में अनेक नगर पालिकाओं ने नेतृत्व किया और कई स्थानों पर नगर निगम के अध्यक्ष व सदस्यों ने युवकों की साईकिल रैली में शामिल हुए। कई स्थानों पर राज्य मंत्री और महाप्रबंधक की उपस्थिति में सद्भावना युवाओं का माला पहनाकर स्वागत किया। सद्भावना यात्रा को जिला कलेक्टरों और पुलिस अधिकारी रेलवे स्टेशन अन्य स्थानों पर आयोजित स्वागत समारोह में यात्रियों का स्वागत करने पहुँचे।

सुब्बाराव जी यात्रा के दौरान सद्भावना का उद्देश्य और ट्रेन का आगमन तथा प्रस्थान के समय को बताते हुए जिस भी प्रदेश में सद्भावना यात्रा पहुँचती उसका विवरण एक स्वर्ण–पत्र भेजते थे। स्थानीय लोगों ने बिना रूके कार्यक्रमों का आयोजन कर सके। कुछ मुख्यमंत्री और राज्यपाल युवाओं से नहीं मिल सके। लेकिन आंध्र–प्रदेश के मंत्री 'सबाशिव राजू' ने वजलनगरम जिला कलेक्टर में साईकिल रैली को हरी झंडी दिखाई। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने 1500 सचिवीय कर्मचारियों को उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया। सरकार जल्द ही एक विशाल सद्भावना कार्यक्रम आयोजित करेगा ताकि प्रत्येक गांव में संदेश पहुँचाया जा सके। भाई जी ने अनुरोध किया, "वे उनसे मिलने के लिए समय निकाले और रेलयात्रा समाप्त होने के बाद इस मामले पर चर्चा करें। पुरुषों और महिलाओं के समूह संदेश फैलाने के लिए साईकिल पर गांवों में जाऐंगे तो सरकार से जो भी आवश्यक सहायता होगी वह होगी।"[43]

## सद्भावना युवाओं ने शैक्षणिक संस्थानों का किया दौरा

दैनिक कार्यक्रम की शुरूआत सुबह 8 बजे शुरू होती, जहाँ सद्भावना रेल रूकती वहाँ से युवा अपनी–अपनी साईकिल पर सवार होकर आस–पास के कस्बों/गांव की सड़कों और शैक्षणिक संस्थाओं, झुग्गी–झोपड़ी तथा गांवों में जाकर सद्भावना शांति रैली निकालते व स्वागत सभाओं में युवाओं को राज्यवर जनता से मिलाया जाता था। युवा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में नारे लगाते थे जिससे सद्भावना का अच्छा माहौल बनता था। सुब्बाराव ने हजारों छात्रों और शिक्षकों को सद्भावना मिशन का संदेश दिया तो स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में स्वागत किया गया। कुछ स्कूल, कॉलेजों में छात्र भोजन के लिए युवकों को अपने घर ले गये और अन्य मामलों में छात्र अपने घरों से भोजन लाए तथा युवाओं को परोसा उनके साथ सामुदायिक दोपहर का भोजन किया। युवाओं को विभिन्न धार्मिक और सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ घुलने–मिलने मित्रता का स्थाई बंधन का मौका मिला।

सद्भावना मिशन ने विभिन्न धार्मिक समूहों के पूजा स्थलों का दौरा किया इसमें स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, कस्तूरबा गांधी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े स्थानों से जाने और प्रेरणा लेने का एक बिन्दु बना दिया। उन्होंने, "कलकत्ता, हैदराबाद के पास बैलूर मठ एवं रामकृष्ण मठ, कन्याकुमारी में विवेकानंद स्मारक, जलियां वाला बाग, पोरबंदर गांधी जी का जन्म स्थान, राजकोट में गांधी चित्रालय, कोचाब साबरमती सेवाग्राम में गांधी जी के आश्रम, मणिभवन, गांधी राष्ट्रीय स्मारक, बॉम्बे में क्रांति मैदान, पुणे में आगाखाँ पैलेस, राजघाट में गांधी समाधि, गांधी पीस फाउंडेशन, नई दिल्ली, सद्भावना युवाओं ने पौनार आश्रम और महाराष्ट्र के वर्धा में कुष्ठ रोग गृह का दौरा किया।"[44]

गांवों का दौरा कर ग्रामीणों की समस्याओं को सुनना चर्चा करना साथ में उनके घरों में भोजन करना युवाओं में विशेष रूचि देखी। हर जगह के ग्रामीणों ने गर्मजोशी से स्वागत और नक्सलवादी क्षेत्रों में दौरा विशेष रहा। गांव की महिलाएँ सद्भावना युवकों से मिलना और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में ज्यादातर महिलाओं ने इनमें भाग लिया। सद्भावना के युवा के परिचित लोगों के अलावा पूरी तरह से अनजान लोग, युवा, बुढ़े पस आते और भावुकता से कहते, "आप बहुत उपयोगी सेवा कर रहे हैं, कृपया इसे जारी रखना।"[45] कई स्थानों पर स्थानीय आयोजकों ने भाई जी से कहा, "अगर हमें पता होता कि सद्भावना कार्यक्रम इतना प्रभावी होगा तो हम यहाँ अपना पूरा शहर इक्ठ्ठा कर लेते।"[46]

## डॉ॰ सुब्बाराव एवं उनकी सहयोगी टीम

सद्भावना रेल यात्रा के सबसे ऊर्जावान युवा सद्भावना मिशन को सुचारू रूप से चलाने वाले भाई जी का व्यक्तिगत सम्बन्ध युवाओं के साथ 50 वर्षों से अधिक विकसित किया जो सद्भावना रेल यात्रा की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान किया भाई जी की सबसे कठोर जीवन शैली तथा बहुत सरल आदते और सबसे बढ़कर उनका सौम्य स्वभाव और साथियों का अटूट प्रेम महान बनाता है।

सद्भावना रेल यात्रा भाई जी के दिमाग की उपज थी, जिन्होंने देश–विदेश के युवाओं को राष्ट्र–निर्माण की गतिविधियों को जुटाने और प्रशिक्षित करने में लगा दिया। सद्भावना मिशन के 8 महीनों में भाई जी के सहयोगी व निर्देशक की सहायता के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक छोटी टीम थी– ईश्वर जोइस ट्रेन प्रबंधक, डॉ॰ रणसिंह परमार, यात्रा का संचालन, NYP सचिव, डॉ॰ कमल मिश्रा (UP) NYP प्रभारी, केदार नाथ मिश्रा (UP) प्रभारी, मधुसूदन दास उड़ीसा, NYP प्रभारी, बी॰आर॰ रामकृष्ण (कर्नाटक) कार्यालय प्रभारी, सुश्री मनोरमा (UP) कानपुर, सी॰एच॰ गणराज (मणिपुर), पी॰राजन (केरल) सहायक टाईपिस्ट, दलीप सासाने (महाराष्ट्र) स्टोर प्रभारी, डॉ॰ लिसी भरूचा (महाराष्ट्र) शांति शोधकर्त्ता। यह मुख्य रूप से जन–संपर्क की प्रभारी थी।[47]

इसके अलावा कुछ समय के लिए कार्यक्रम में मदद करने वाले और युवा साथी थे– पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्त्ता भाई जी के सहयोगी ए॰ कुमार, डॉ॰ आर॰सी॰ गुप्ता, सुश्री उमा, श्रीमती रेणुका पठानकर ने विशेष रूप से भाई जी के लिए भोजन का ध्यान रखा।

## निष्कर्ष

सुब्बाराव ने कुछ वर्षों से हो रहें, संगठित हिंसा में वृद्धि से विभिन्न हिस्सों में हुए दंगे जिनमें साम्प्रदायिक और राजनीतिक थे। हिंसाग्रस्त स्थानों पर सुब्बाराव के नेतृत्व में राष्ट्रीय युवा योजना के द्वारा दंगे प्रभावित स्थानोंपर शिविर आयोजित किये गए। शिविरों के माध्यम से सभी राज्यों के युवाओं को संगठित किया।

बार–बार होने वाले दंगों से उत्पन्न भय और संदेह के कारण राष्ट्रव्यापी स्तर पर युवा शक्ति का प्रयोग कर भाई जी ने सद्भावना रेल यात्रा का प्रयोग कर पूरे भारत वर्ष में शांति भाई–चारा, सद्भाव की अलख जगाई। देश में शांति हुई, आपसी मतभेदों को खत्म किया। वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारत की संतान और सर्वधर्म प्रार्थना से सभी धर्मों का समान आपसी मतभेदों को खत्म करना। ट्रेन के अंदर 250 साईकिलें जो रेल से उत्तर के जिस क्षेत्र में जाते, वहाँ शांति साईकिल यात्रा तथा NYP में होने वाले कार्यक्रमों नारे, प्रचार–प्रसार और गांधी विचार धारा को आगे बढ़ाया।

पूरे भारतवर्ष में सद्भावना रेल यात्रा को अनूठा प्रयोग एक चलता फिरता भारत की संज्ञा दी। भाई जी को मानव रत्न कहा उसके कार्यों की सराहना की।

## टिप्पणी एवं संदर्भ

[1]. सलेम, नज्जुदेया, *सुब्बाराव,* साक्षात्कार
[2]. वही,
[3]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली।
[4]. परमार, रणसिंह, *साक्षात्कार,* NYP के अध्यक्ष।
[5]. सिंह, गुरूदेव, (2017), *मेरी जीवन माला के मोती,* नई दिल्ली, पृ॰ 58
[6]. वही, पृ॰ 66
[7]. वही, पृ॰ 66
[8]. वही, पृ॰ 66
[9]. वही, पृ॰ 66
[10]. स्कूल शिक्षा, द्विभाषी मासिक पत्रिका, 2017, भोपाल, पृ॰ 12
[11]. वही, पृ॰ 12
[12]. वही, पृ॰ 12
[13]. सिंह, गुरूदेव, (2017), *मेरी जीवन माला के मोती,* नई दिल्ली, पृ॰ 68
[14]. वही, पृ॰ 68
[15]. वही, पृ॰ 68
[16]. वही, पृ॰ 68
[17]. कुमार मनोरमा, (1993), *युवा संस्कार, मासिक पत्रिका, सद्भावना रेलयात्रा में आपका योगदान,* नई दिल्ली, वॉल्यूम 3, अंक 4, पृ॰ 4
[18]. वही, पृ॰ 4
[19]. वही, पृ॰ 4
[20]. सिंह, गुरूदेव, (2017), *मेरी जीवन माला के मोती,* नई दिल्ली, पृ॰ 68
[21]. वही, पृ॰ 68
[22]. वही, पृ॰ 68
[23]. वही, पृ॰ 68
[24]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली, पृ॰ 8
[25]. वही, पृ॰ 5
[26]. धर्मेन्द्र भाई साक्षात्कार, भाई जी का पी॰ए॰ और का NYP कार्यकर्त्ता, नई दिल्ली।
[27]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली, पृ॰ 7
[28]. राठी, सुरेश, (साक्षात्कार), हरियाणा युवा शक्ति के प्रधान, NYP कार्यकर्त्ता।
[29]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली, पृ॰ 8
[30]. वही, पृ॰ 8
[31]. वही, पृ॰ 8
[32]. वही, पृ॰ 8
[33]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली, पृ॰ 13
[34]. वही, पृ॰ 13
[35]. नागर, महेन्द्र, (2013), *माई पेन स्पीकज, ए कलैक्शन ऑफ स्पोन्टेनकॉज एंड अवेक्निंग ऑफ डॉ॰ एस॰एन॰ सुब्बाराव,* वाराणसी, पृ॰ 21
[36]. वही, पृ॰ 21
[37]. वही, पृ॰ 21
[38]. वही, पृ॰ 21
[39]. वही, पृ॰ 21
[40]. भरूचा, लिसी, (1995), *गुडविल ऑन व्हीलज,* नई दिल्ली, पृ॰ 17
[41]. वही, पृ॰ 39
[42]. वही, पृ॰ 39
[43]. वही, पृ॰ 27
[44]. वही, पृ॰ 27
[45]. वही, पृ॰ 27
[46]. वही, पृ॰ 27
[47]. परमार, रणसिंह, *साक्षात्कार,* NYP के सचिव।